पुष्यभूति वंश / वर्द्धन वंश

- गुप्त साम्राज्य के पतनोपरांत विभिन्न राजवंशों का उदय हुआ जिसमें से एक पुष्यभूति वंश या वर्द्धन वंश भी था।

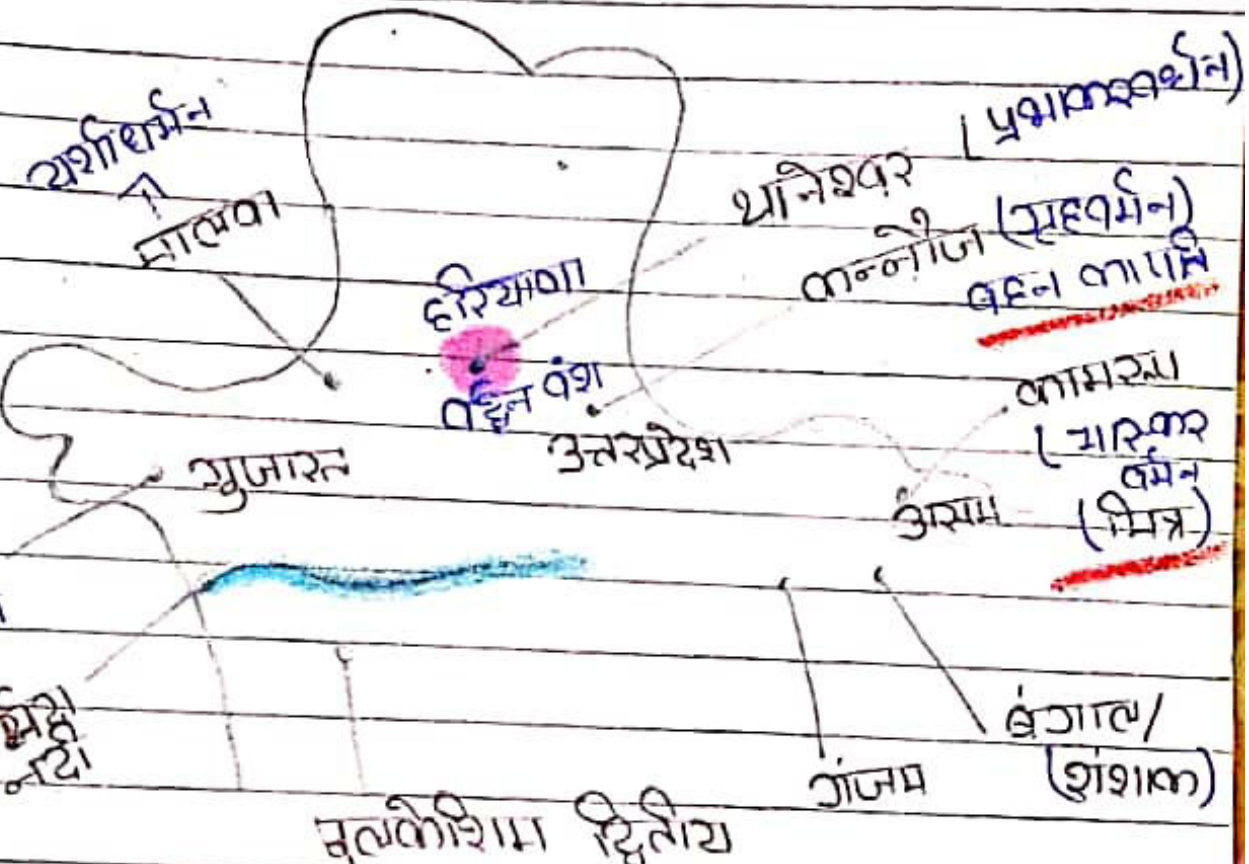

- वर्द्धन वंश के शासक

⇓

पुष्यभूति (संस्थापक) ⇒ नरवर्द्धन ⇒ राज्यवर्द्धन I

⇓

आदित्यवर्धन

⇓

प्रभाकरवर्धन

⇓

राज्यवर्धन II | हर्षवर्धन | राज्यश्री

Date
Page

पुष्यभूति वंश – इसके संस्थापक पुष्यभूति थे। इनकी राजधानी थानेश्वर (हरियाणा) थी। इस वंश के अन्य कई राजाओं की उपलब्धियों की जानकारी हमें न के बराबर मिलती है, परन्तु उन्ही सभी राजाओं में प्रभाकरवर्द्धन थे जिन्हें इस वंश की स्वतंत्रता का दाता कहा जाता है। इन्होंने परमभट्टारक और महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। इनके ही पुत्र थे राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन

प्रथम पुत्र राज्यवर्द्धन की शत्रुओं द्वारा हत्या के उपरांत हर्षवर्द्धन को शासक बनाया गया।

- हर्षवर्द्धन :- (606 - 647 ई०)

जन्म - 589-590 ई० माता - यशोमति
राज्यगद्दी पर आसीत → 606 ई० में 16 वर्ष की अवस्था में राजगद्दी पर बैठा।

उपाधियाँ :- परमभट्टारक

Scanned with CamScanner

हर्षवर्धन बड़े भाई की मृत्यु के उपरान्त 16 वर्ष की अवस्था में 606 ई० में राजगद्दी पर बैठा। जब उसकी उम्र खेलने-कूदने की थी, उसे उस साम्राज्य को सम्भालने तथा भाई के हत्यारे को मारने का कर्तव्य उसके कंधे पर थमा दिया गया। पहले तो दरबार के लोग उसे इस पद पर विराजमान करने में हिचकिचाते रहे थे परन्तु उसने अदम्य उत्साह और सैनिक योग्यता से जनता का यह सन्देह दूर कर दिया।

हर्ष पहली बार युद्ध में शशांक को पराजित किया जो कि उसके भाई का हत्यारा था और फिर कन्नौज पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी बना लिया। हर्ष के पराक्रमी सौन्दर्य को देखकर शिलादित्य नाम प्रदान किया गया जो काफी प्रसिद्ध नाम था उसका। इसके साथ-साथ उसे बासखेड़ा तथा मधुबन अभिलेखों में परम महेश्वर कहा गया है। हर्ष के साम्राज्य का विस्तार उत्तर में थानेश्वर (पूर्वी पंजाब) से लेकर दक्षिण में नर्मदा घाटी

केरल तथा पूर्व में गंजाम से लेकर पश्चिम में वल्लभी तक फैला हुआ था। भारतीय इतिहास में हर्ष का सर्वाधिक महत्व इसलिए भी है कि वह उत्तरी भारत का अंतिम हिन्दू सम्राट था, जिसने आर्यावर्त पर शासन किया।

हर्षवर्द्धन के राजकाल को दो भागों में कुछ साहित्यकारों ने बाँटा है -

1. युद्ध काल (606 - 612 ई०)

2. शांति काल (612 - 642 ई०)

- हर्ष का शासन प्रबंध :-

पद्य • हर्ष को एक प्रशासक एवं प्रजावत्स प्रजापालक राजा के रूप में स्मरण किया जाता है। नागानंद में उल्लेख मिलता है कि हर्ष का आदर्श प्रजा को खुशी एवं प्रसन्न देखना था।

• हर्ष के प्रशासन में क्रांति, युद्ध और शांति का अधिकार था। हर्ष की प्रशास

व्यवस्था मुक्तकालीन पर आधारित थी। बहुत से प्रशासनिक पद मुक्तकालीन थे, जैसे 'संधिविग्रहिक' 'अपतलेखिकृत' 'सेनापति' आदि।

- हर्ष ने अपने साम्राज्य की सुरक्षा के लिए एक संगठित सेना का गठन किया था। सेना में पैदल, अश्वारोही, रथारोही और हस्तिआरोही होते थे। इन सब की जानकारी चीनी यात्री ह्वेनसांग जो उसके दरबार में आया था। इसके द्वारा लिखित स्रोत से उस समय की सैनिक प्रबंधन का पता चलता है। उसने लिखा है कि "6 वर्षों तक वह लगातार युद्ध करता रहा है और उसने पांच भारत को जीता। उसकी सेना में 60,000 गजसेना और अश्वसेना 1,00,000 हो गयी थी। पश्चात 30 वर्षों तक वह बिना शस्त्र उठाये राज्य करता रहा।

विपक्ष :- • बेहतर शासन प्रबंधन होने के उपरान्त भी हर्षवर्द्धन को पुलकेशिन द्वितीय से नर्मदा नदी पर युद्ध करने के उपरांत पराजय का सामना करना पड़ा।

जिसके, फलस्वरूप उसे द्वितीय पूर्वी सैन्य अभियान चलाना पड़ा।

Scanned with CamScanner